## LIVRE II.

## CHAPITRE PREMIER.

TERRE, CONTRÉES, ROUTES, MESURES DE DISTANCE.

- वर्गाः पृथ्वीपुरस्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः।
- १ नृत्रह्मसत्रविद्रपूद्रेः साङ्गोपाङ्गेर् इहोदिताः]॥१॥
- <sup>3</sup> भूर भूमिर् के अचलानना के सा विश्वम्भरा स्थिरा।
- । ध्रा धरित्रो धरिण: स्रोणी <sup>°</sup> ज्या काश्यपी स्निति: ॥ २॥
- <sup>5</sup> सर्वसहा <sup>d</sup> वसुमती वसुधोर्वी <sup>c</sup> वसुन्धरा।
- णोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी हमाविनर्<sup>ष</sup> मेहिनी मही ॥ ३॥
- <sup>7</sup> मृन् मृत्तिका ं
- [प्रशस्ता तु] मृत्सा मृत्सा [च मृत्तिका]।
- 9 उर्वग [सर्वशस्याख्या]
- [स्याद्] ऊषः क्षार्मृत्तिका॥ ४॥
- 11 जषवान् जषरो<sup>j</sup> [द्वाव् ऋप्य् ऋन्यलिङ्गी]
- (1, 2) Énoncé des chapitres de ce livre. (3-6) Terre. (7) Sol. (8) Sol excellent. (9) produisant toutes sortes de récoltes. (10) Terrain salin. (11) Lieu dont le terrain est salin.
- 'Aussi भूमी. ' अचला, अनन्तां. ' Également धर्णी et चोणिः, चोणिः ou चोणी. ' Aussi सहा. ' वसुधा, उर्वोः ' Ou पृथवी. ' चमा, अविनः; aussi चमा et अवनी. ' Ou महिः. ' Aussi मृदा et मृतिः. ' Ou suivant une autre leçon उपरः et अनूषरः.